Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/227
Peer Reviewed & Refereed Journal, Jan-Feb 2024, Vol- 12/81

बिभिन्न क्षेत्रीय भाषओं से सामाजिक विज्ञान शिक्षण के अध्ययन का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन: झारखण्ड के सन्दर्भ में

डॉ. मुन्ना राम महतो
शोधार्थी, झा.के.वि.वि., राँची.

Paper Received On: 20 JAN 2024
Peer Reviewed On: 28 FEB 2024
Published On: 01 MAR 2024

Abstract

भारत भौगोलिक विविधताओं के साथ बहुभाषी राज्यों का संघ है। इसी को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा निति(एनईपी)-2020 में बहुभाषा को महत्त्व देकर क्षेत्रीय भाषाओं को प्रोत्साहित किया है, और प्राथमिक स्तरीय शिक्षा में क्षेत्रीय भाषाओँ को शामिल करने पर बल दिया है। भारतीय भाषाओँ में अध्ययन कर छात्र-छात्राएं न केवल अतीत से गौरवान्वित होकर वर्तमान में संतुलित व्यवहार की ओर अग्रसर होंगे, अपितु भविष्य के प्रति भी उल्लासित होंगे। सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण पाठ्यक्रम में शामिल एक विषय नहीं बल्कि यक दुनिया की एक खिड़की है। इसमें इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र, शिक्षा शास्त्र, समाजशास्त्र और नैतिक शास्त्र जैसे विषयों की एक विस्तृत श्रृखला शामिल है। जो मानव समाज के सामाजिक ताना-बाना को समझने के लिए आवश्यक है। क्षेत्रीय भाषाओँ के द्वारा सामाजिक विज्ञान विषयों का अध्ययन से छात्रों की संज्ञानात्मक विकास तीव्र होती है। इनकी शैक्षिक उपलब्धि में बृद्धि होती है, क्योंकि वे संबंधित विषयों एवं भावों को आसानी से समझ सकता है और इससे आत्मसात कर अपने जीवन को अनुशासित करता है।

मुख्य शब्द *– क्षेत्रीय भाषा, सामाजिक विज्ञान, प्राथमिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि*

प्रस्तावना -

मानव के प्रगति में भाषा का होंना नितांत आवश्यक है। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों एवं मनोभाओं को दुसरे के पास अभिव्यक्त करतें हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के नाते उससे आपस में सर्वदा ही विचार-विनिमय करना पड़ता है। चाहे वह शब्द के रूप में हो, वाक्य के रूप में या सांकेतिक रूप में, सभी मिलकर भाषा का निर्माण करते है। भाषा को तीन रूप में विभाजित किया सकता है। क. लिखित, ख. मौखिक और ग. सांकेतिक।

भाषा सम्प्रेषण का प्रमुख माध्यम है। भाषा-एक समुदाय, क्षेत्र और देश के लोगों के मध्य एकता, आत्मीयता और निकटता लाने का कार्य करती है। इस रूप में भाषा का राष्ट्रीय महत्व है। राष्ट्र निर्माण में जिन प्रमुख तत्वों पर

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विचार किया जाता है उनमें भाषा एक प्रमुख तत्व है I भाषा वैज्ञानिक डॉ भोला नाथ तिवारी द्वारा रचित पुस्तक 'भाषा विज्ञान' में विश्व के समस्त भाषाओँ को 13 भाषा परिवार में विभाजित किया है, 1. द्रविड़ परिवार, 2.चीनी अथवा एकाक्षरी परिवार, 3.सेमेटिक-हेमेटिक (सामी-हामी)परिवार, 4.यूराल- अल्टाईक परिवार, 5. काकेशियन परिवार, 6.जापानी-कोरियाई परिवार, 7. बांटू परिवार 8. आस्ट्रो एशियाटिक परिवार, 9.बुशमैन परिवार, 10. मलय-पौलिनेशियन परिवार, 11. सुडान परिवार, 12. अमेरिकी परिवार, 13.भारोपीय परिवार आदि, भारत बहुभाषिक देश है I भाषा वैज्ञानिकों का विचार है कि यहाँ 5 (पांच) भाषा परिवारों की उपस्थिति है I जो विश्व के किसी अन्य देश में नहीं है I ये पांच भाषा परिवारों में भारोपीय (इंडोआर्यन), द्रविड़, आस्ट्रो एशियाटिक, सेमेटिक-हेमेटिक, तथा बुशमैन परिवार हैI जिनमे भाषा शास्त्री जोर्ज अब्राहम ग्रियर्सन "लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया" में झारखण्ड के भाषाओँ को 3 (तीन) भाषा परिवार के अंतर्गत रखे है, भारोपीय (इंडोआर्यन), द्रविड़, एवं आस्ट्रो एशियाटिक A

जहाँ तक भाषा और शिक्षा का संबन्ध है शिक्षा भाषा के माध्यम से दिया जाता है I यह व्यक्ति के अज्ञान को दूर करने का साधन है I शिक्षा की उपयोगिता व्यक्ति और समाज दोनों के ही सन्दर्भ में हैA व्यक्ति के लिए शिक्षा को इसलिए महत्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि शिक्षा से व्यक्ति का आचरण,विचार और व्यवहार सुव्यवस्थित तथा सुसंस्कृत हो जाता हैA और उसका जीवन उतरोत्तर उत्कृष्ट हो जाता है I शिक्षा प्राप्ति के फलस्वरूप समाज का विकास स्वत: ही हो जाता हैI शिक्षा समाज को नियंत्रितa एवं संस्कारित करनेवाली प्रक्रिया भी हैA शिक्षा का उद्देश्य एक समाज के आदर्शों मूल्यों एवं मान्यताओं को मूर्त रूप देना हैA शिक्षा मनुष्य को अज्ञान, मानसिक सामाजिक जड़ता तथा दुःख के बन्धनों से मुक्त करती है, और उसे अहिंसक एवं शोषण-विहीन सामाजिक व्यावस्था की ओर ले जाती है I अत: विद्यालयी पाठ्यचर्या का उद्देश्य होना चाहिए कि वे शिक्षार्थियों को ज्ञान अर्जित करने, समझ विकसित करने, कौशलों को विकसित करने, साकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने एवं व्यक्तित्व को समग्र विकास के लिए उपयोगी मूल्य और आदतें अपनाने के योग्य बनाएँ I

शिक्षा के विभिन्न स्तर

शिक्षा को विभिन्न स्तरों के माध्यम से ही सिखाया जाता है तथा बालक में आत्म विश्वास एवं अच्छे नागरिक के गुणों का विकास किया जाता है I वास्तव में प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा रूपी बृक्ष का मूल है, माध्यमिक शिक्षा इस बृक्ष कि तना है, और उच्च शिक्षा इस बृक्ष के फुल और फल है I प्राथमिक शिक्षा के द्वारा बालक का विकास का नींव रखी जाती है, माध्यमिक शिक्षा के द्वारा उससे आगे बढाया जाता है, तथा उच्च शिक्षा के द्वारा उससे विकास के शीर्षतम शिखर पर ले जाया जाता है I देखा जाय तो शिक्षा के तीनो स्तर अपने आप में काफी महत्वपूर्ण है और एक दुसरे से परस्पर सम्बंधित है I यहाँ हमारे विचारों का केन्द्र विन्दु प्राथमिक शिक्षा है जो शिक्षा का मूलाधार है I मानव सभ्यता व् संस्कृति के विकास से संबधित अध्ययन शिक्षा के माध्यम से किया जाता हैA अत: विधार्थियों के लिए शिक्षा कि व्यवस्था अनेक स्तरों पर कि गई है I जिनमें प्राथमिक स्तर(1-5),उच्च प्राथमिक स्तर(6-8) माध्यमिक स्तर(9-10),उच्तर माध्यमिक स्तर(11-12), उच्च स्तर (विश्वविद्यालय स्तर) है I

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण का महत्व

सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण पाठ्यक्रम में शामिल एक विषय नहीं बल्कि यक दुनिया की एक खिड़की है I इसमें इतिहास, भूगोल,अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र, शिक्षा शास्त्र, समाजशास्त्र और नैतिक शास्त्र जैसे विषयों कीएक विस्तृत श्रृखला शामिल है I जो मानव समाज के सामाजिक ताना-बाना को समझने के लिए आवश्यक है I सामाजिक विज्ञान का अध्ययन करने वाले छात्रों को दुनिया भर की विभिन्न संरचनाएँ, सम्प्रदाय और समाजों से परिचित कराया जाता है I यह उन्हें अलग अलग पृष्ठभूमि वाले लोगों की सहानुभूति और सहिष्णुता विकसित करने में मदद करता है I जिससे वैश्विक संस्कृति की भावना को बढ़ावा मिलता है I सामाजिक विज्ञान शिक्षण से छात्रों को सामाजिक असामनता, पर्यावरण संबंधी चिंताओं और मानवाधिकारों के उलंघन जैसे सामाजिक मुद्दों से संबंधित ज्ञान एवं जागरूकता लाती है I

सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण हेतु भाषाएँ :- झारखण्ड को भाषा की त्रिवेणी राज्य भी कहा जाता है I क्योंकि यहाँ प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ ही साथ भाषा में विविधता पाया जाता है I यहाँ भिन्न- भिन्न भाषा भाषी के लोग रहते हैं I यहाँ तीन भाषा परिवार इन्डो आर्यन, प्रोटो- अस्ट्रेलाइड एवं द्रविड़ पाई जाती है I झारखण्ड में बोली जाने वाली भाषाओँ को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है I

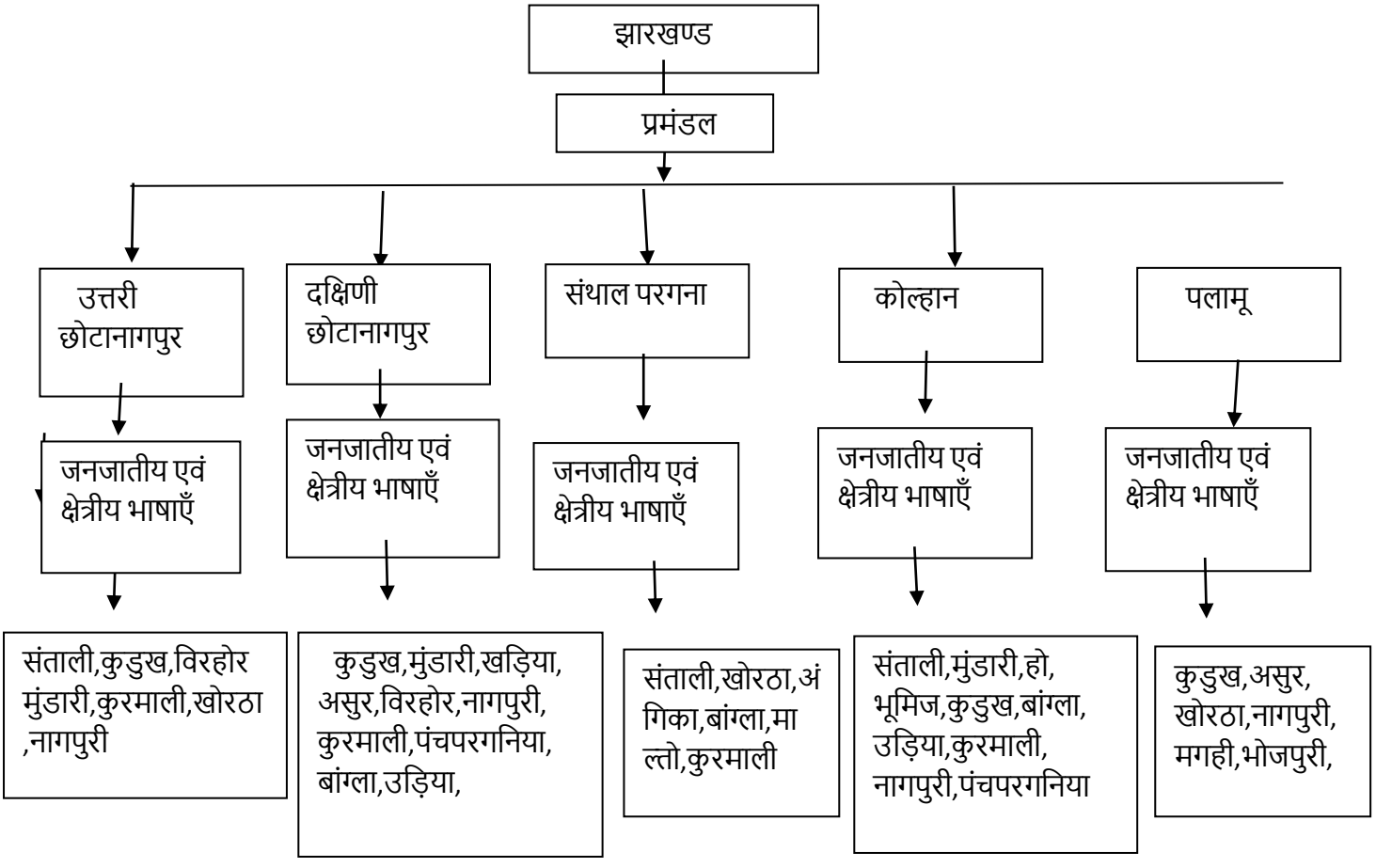

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शोध समस्या का औचित्य -

प्रस्तुत शोध में संबंधित साहित्य के अध्ययन के पश्चात हमें पता चला कि, सामाजिक विज्ञान शिक्षण में तो अधिकतर शोध हुए हैं किन्तु सभी सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत इतिहास, नागरिक शास्त्र, भूगोल, अर्थ शास्त्र, नैतिक शास्त्र, समाज शास्त्र, शिक्षा शास्त्र में ज्यादातर शोध हिंदी भाषा तथा अंग्रेजी भाषा में हुए हैं I

शोध के उद्देश्य -

- प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण में क्षेत्रीय भाषा का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना I
- प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण में क्षेत्रीय भाषा का छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना I
- प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण में क्षेत्रीय भाषा नागपुरी और कुरमाली का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना I
- प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण में क्षेत्रीय भाषा नागपुरी और कुरमाली का छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना I

शोध परिकल्पना -

- प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण में क्षेत्रीय भाषा नागपुरी के माध्यम से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ेगी I
- प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण में क्षेत्रीय भाषा नागपुरी के माध्यम से छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ेगी I
- प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण में क्षेत्रीय भाषा नागपुरी और कुरमाली के माध्यम से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ेगी I
- प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण में क्षेत्रीय भाषा नागपुरी और कुरमाली के माध्यम से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ेगी I

प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की व्याख्या -

- क्षेत्रीय भाषा – प्रस्तुत शोध में क्षेत्रीय भाषा उससे माना गया है जहाँ किसी भाषा के अधिकांश बोलने वाले किसी राज्य या देश के केवल एक विशेष क्षेत्र में केन्द्रित होते हैं I
- सामाजिक विज्ञानं शिक्षण – प्रस्तुत शोध में सामाजिकविज्ञानं शिक्षण का तात्पर्य विद्यार्थियों के शिक्षा में स्वतंत्रता, विश्वास, पारस्परिक सम्मान, और विविधता के प्रति सम्मान जैसे मानवीय गुणों के लिए एक जनाधार का निर्माण करने और उसका विस्तार करने से है I
- प्राथमिक स्तर - प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक स्तर का तात्पर्य विद्यालयी कक्षा 01 से 05 तक में शिक्षा प्रदान करने वाली सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी विद्यालयों के छात्रों से है I

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

- **शैक्षिक उपलब्धि** – प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य, विद्यार्थियों के क्षेत्रीय भाषा द्वारा सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण से संबंधित अर्जित ज्ञान से है जिसका मापन स्वनिर्मित उपलब्धि परिक्षण का प्रयोग से होती है I
- **विद्यार्थी** – प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत कक्षा 01 से 05 तक के बच्चों को माना गया है I

चर -

- **स्वतंत्र चर** – क्षेत्रीय भाषाएँ
- **आश्रित चर** – शैक्षिक उपलब्धि

जनसंख्या -

प्रस्तुत शोध में झारखण्ड राज्य के प्राथमिक स्तर के सभी विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायगा I जिन्हें झारखण्ड में बोली जानेवाली क्षेत्रीय भाषाओं का ज्ञान हो I

न्यादर्श

न्यायदर्श के रूप में क्षेत्रीय भाषा से कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसमें विभिन्न प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में से किया जायेगा I

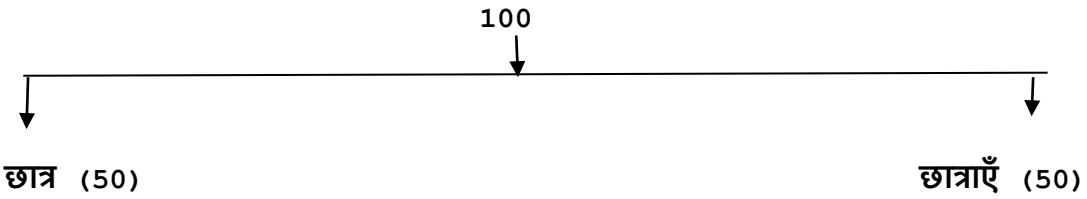

- **शोध विधि** - प्रयुक्त शोध में प्रायोगिक विधि का प्रयोग किया जायेगा
- **उपकरण** - प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया जायेगा। इस अध्ययन में प्रतिदर्श को सोउद्देश्य विधि के द्वारा चयनित किया जायेगा।
- **विश्लेषण**

परिकल्पना –

प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय में क्षेत्रीय भाषा (नागपुरी) के माध्यम से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

समुह	विद्यार्थी संख्या	मध्य मान	मानक विचलन	टी -मूल्य	स्वीकृत/अस्वीकृत
प्री- टेस्ट	50	37.84	8.14	1.27	स्वीकृत
क्षेत्रीय भाषा (नागपुरी)	50	34.27	7.18		

(तालिका 1.1)

0.05 – सार्थकता स्तर पर t का मान - 1.98

0.01 – सार्थकता स्तर पर t का मान - 2.63

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विश्लेषण - तालिका (1.1) में पारम्परिक व्यवस्था के अनुसार प्री-टेस्ट के विद्यार्थियों का प्राप्त मध्य मान -37.84 व मानक विचलन 8.14 है तथा क्षेत्रीय भाषा (नागपुरी) के विद्यार्थियों का प्राप्त मध्यमान 34.27 व मानक विचलन 7.18 है I इस प्रकार दोनों मध्यमानों से प्राप्त टी- मूल्य 1.27 है I सार्थकता स्तर पे जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर टी-मूल्य 1.98 व 2.63 से कम है अत: कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय को क्षेत्रीय भाषा(नागपुरी) के माध्यम से अध्ययन करने से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती हैI अत: परिकल्पना स्वीकृत होती है I

परिकल्पना –

प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण में क्षेत्रीय भाषा (नागपुरी) के माध्यम से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ेगी I

समुह	**विद्यार्थी संख्या**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**टी- मूल्य**	**स्वीकृत/ अस्वीकृत**
प्री- टेस्ट	25	33.98	7.44	1.56	स्वीकृत
क्षेत्रीय भाषा (नागपुरी)	25	29.35	7.04		

(तालिका 1.2)

0.05 – सार्थकता स्तर पर t का मान - 2.01

0.01 – सार्थकता स्तर पर t का मान - 2.68

विश्लेषण – तालिका संख्या (1.2) के अनुसार प्री- टेस्ट के छात्रों का प्राप्त मध्यमान 33.98 व मानक विचलन 7.44 है तथा क्षेत्रीय भाषा (नागपुरी) के माध्यम से छात्रों का प्राप्त मध्यमान 29.35 व मानक विचलन 7.07 है I इस प्रकार इन दोनों मध्यमानों से प्राप्त t मूल्य 1.56 है I जो सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 स्तर पर टी-मूल्य 2.01 एवं 2.68 से कम है अत: कहा जा सकता है प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण में क्षेत्रीय भाषा (नागपुरी) के माध्यम से अध्ययन से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ेगी I

परिकल्पना -

प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण में क्षेत्रीय भाषा नागपुरी के माध्यम से छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ेगी I

समुह	**विद्यार्थी संख्या**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**टी-मूल्य**	**स्वीकृत/अस्वीकृत**
प्री-टेस्ट	25	31.90	8.11	0.47	स्वीकृत
क्षेत्रीय भाषा (नागपुरी)	25	31.25	6.67		

(तालिका 1.3)

0.05 – सार्थकता स्तर पर t का मान -2.01

0.01 – सार्थकता स्तर पर t का मान -2.68

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विश्लेषण – तालिका 1.3 के अनुसार प्री-टेस्ट के छात्राओं का प्राप्त मध्यमान 31.90 व मानक विचलन 8.11 है तथा क्षेत्रीय भाषा (नागपुरी) के माध्यम के मध्यमान 31.25 व मानक विचलन 6.67 है I इस प्रकार दोनों मध्यमानो से अन्तर का टी-मूल्य 0.47 है I जो सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 स्तर पर टी-मूल्य 2.01 एवं 2.68 से कम है अत: कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञानं विषय में क्षेत्रीय भाषा (नागपुरी) द्वारा अध्ययन से छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है I अत: परिकल्पना स्वीकृत होती है I

निष्कर्ष -

निष्कर्षत: कह सकते हैं कि प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय के अध्ययन के लिए यदि क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करतें हैं तो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है I भाषा किसी व्यक्ति के जीवन का दर्पण है I यह व्यक्ति की आशा, आकांक्षा, आनंद, वेदना, जगत और जीवन सम्बन्धी मनोभावों तथा विभिन्न अनुभूतियों को आत्मसात कराता हैA क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से शिक्षा देनें से प्राथमिक छात्रों में शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ती है तथा वे नियमित विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने आते हैंA विद्यालय छोड़ने कि प्रवृति कम होती हैA मातृभाषा अध्ययन से भारतीय भाषाएँ विलुप्त नहीं होंगी साथ ही संस्कृति भी संरक्षित रहेगी और अन्य आधुनिक भाषाएँ सीखने में मदद मिलेगी I

सन्दर्भ सूची :-

- *तिवारी डॉ. भोलानाथ (2019) भाषा विज्ञान, किताब महल, २२-ए सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद 2019.*
- *अनुज डॉ. भुवनेश्वर (2019) क्षेत्रीय एवं जनजातीय भाषा साहित्य, पृथ्वी प्रकाशण रोहतक रोड नई दिल्ली 2019.*
- *रूहेला प्रो. एस. पी. (2008) विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा 2008.*
- *सिंह मनोज कुमार (2005) शिक्षा और समाज, आदित्य पब्लिकेशन मध्यप्रदेश 2005.*
- *बेअल सी. जोआन (2014) लैंग्वेज एंड रीजन, रोउटलेद्ज सेकंड पार्क स्क्रुओएर मिल्टन पार्क अबिंग्डन ओक्सोंन 2014.*
- *देसाई के. मीरा (2022) रीजनल लैंग्वेज टेलीवीजन इन इंडिया, रोउटलेद्ज थर्ड अवेन्यू न्यू यार्क 2022.*
- *कपाड़िया डॉ. स्वाति (2022), इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थोट, वॉल्यूम- 10, इशू-02, आई एस एस एन 2320-2882*
- *वेलडे हंस वनडे, क्रिचर रूठ & बायट जोहा (2022), लैंग्वेज प्लानिंग, वॉल्यूम- 24, इशू-01, पेज 89-101, आई एस एस एन -203-7291,*
- *निशान्ति राजथुराई (2020), इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ट्रेंड इन साइंटिफिक रिसर्च एंड -डेवलपमेंट, वॉल्यूम-05, इशू 01, आई एस एस एन-2456-6470.*
- *आलिमि फतई ओएकोला (2020), इंटरनेशनल ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ प्राइमरी एजुकेशन वॉल्यूम-09, इशू-02, आई एस एस एन-1300915.*

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies